ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 223-224

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

उषा प्रियम्वदा और उनकी कहानी वापसी

उषा रानी सी.

असि0 प्रोफे0, हिन्दी विभाग, मीनाक्षी कालेज ऑफ वोमेन्स, चेन्नई (तमिलनाडु) भारत

Received- 30.11.2019, Revised- 06.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: usharajeswari315@gmail.com

सारांश : *आधुनिक हिन्दी साहित्य में उषा प्रियम्वदा जी का मुख्य स्थान है। कहानी के क्षेत्र में बहुचर्चित है। उन्होनें अपनी ओजमय पूर्ण लेखनी के बल पर हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान निर्धारित कर लिया है। मनुष्य जीवन का यर्थाथ चित्रण उषा जी की कहानियों में अधिक देखा जाता है। इसी कारण से पाठक सहज और प्रभावपूर्ण रूप से आकर्षित कर लेते हैं। उषा जी की कहानियों के बारे में लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय का कहना है कि – ''आज के नारी जीवन में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो परिवर्तन आये है और जिन नये मूल्यों को आत्मसात करने और अपनाने के लिए आकुल हो रही है । उसका क्या–क्या परिणाम हुए है, उषा प्रियम्वदा को कहानियों में अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ मुखरित हुआ है।''1*

कुंजी शब्द– साहित्य, बहुचर्चित, ओजमय, यर्थाथ चित्रण, नारी जीवन, स्वतंत्रता, आत्मसात, आकुल, सूक्ष्मता।

उषा जी की कहानियों का विकास मुख्य रूप से पात्रों की मानसिक भावनाओं के माध्यम से हुआ है । उनके पात्रों की वृतियाँ प्रायः अन्तर्मुखी है। उषा जी संकेत करती है कि ''मेरे लिए चाहे पात्र विदेश में रहते हो या भारत के किसी छोटे शहर में चाहे वह समाज द्वारा थोपा गया। सुषमा का अकेलापन हो या अपने आप ग्रहण किया हुआ इस राधिका का अजनबीपन, प्रामाणिक है और लेखन के उपयुक्त है।''2

उषा जी द्वारा लिखित कहानी 'वापसी' में अकेलापन, आन्तरिक द्वन्द का चित्रण किया गया है।

आधुनिकता के इस दौर में दो पीढ़ियों के बीच हो रहे बदलाव और टकराव का मार्मिक चयन किया है। कहानी के नायक गजाधर बाबू रिटायर होकर घर लोटते है। अपने ही घर में अकेलापन अनुभव करते हैं। इन्ही अनुभवों का चित्रण किया गया है।

वापसी उषा प्रियम्वदा का बहुचर्चित कहानी है। गजाधर बाबू पैंतीस साल की रेलवे में स्टेशन मास्टर की नौकरी से रिटायर होते है। वे आधिकांश समय अकेले ही काटा। उस अकेलेपन के क्षणों में उन्होंने इसी कल्यना से काटी कि वे रिटायर के बाद अपने परिवार के साथ रहेंगे। संसार की दृष्टि से उनका जीवन सफल कहा जा सकता है कि उन्होंने शहर में एक बड़ा मकान बनवाया। साथ ही बड़ें बेटे और लड़की की शादियाँ कर दी, दो बच्चें कालेज में पढ़ रहे थे।

गजाधर बाबू नौकरी के कारण प्रायः छोटे–छोटे स्टेशनों पर रहे। परिवार के सदस्यों को इन्होंने शहर में ही रखा ताँकि बच्चों की पढ़ाई किसी भी हालत में न बिगड़ें और साथ ही परिवार के सुख–सुविधा का ध्यान बहुत ज्यादा रखते। गजाधर बाबू महीने के शुरू पहले तारीख वेतन का तीन भाग परिवार को भेजते और एक भाग अपने लिए रखते। वे जब भी छुट्टियों में जाते तब बच्चों के साथ हँसते–बोलते और पत्नी से कुछ मनोविनोद करते। इसी सुखद क्षणों के स्मरण में अपने जीवन के सूनेपन को काटते। गजाधर बाबू रिटायर होकर अपने मन में नई उमंगों, खुशियों को लिए हुए, अपने घर लौटते है कि अब बच्चों और पत्नी के साध जीवन का अंतिम क्षण सुख चौन से गुजारेंगे।

गजाधर बाबू घर पहुंचने के बाद पता चलता है कि बड़ा लड़का घर का मालिक बना हुआ है और परिवार के सभी सदस्य अपने–अपने ढंग से जी रहे है। पत्नी ने रसोई को संभाला हुआ था। बहु और बेटी घर में कोई भी काम नही करते। घर में अन्य काम करने के लिए नौकर रखा गया। गजाधर बाबू देखा कि उनका छोटा बेटा नरेन्द्र नृत्य का नकल कर रहा। इस पर परिवार के सभी सदस्य हंसते हैं। वे भी उनके खुशी में शामिल होते हैं। उन्हें देखते ही सब परिवार वाले चुप हो जाते है। वातावरण बहुत गम्भीर हो जाता है।

सुबह का समय गजाधर बाबू चाय और नाश्ते का इन्तजार करते है। तब उन्हें गनेशी की याद आता है, जो उनका सेवक है। रोज सुवह पैसेंजर आने से पहले गनेशी गर्म–गर्म पूरियाँ, जलेबियाँ और चाय लाकर रख देता था। इसी बीच पत्नी आकर कहती है, सारा दिन खिच–खिच कर काम करती हूँ, उम्र भी हो गया है। कोई भी हाथ नही बटाते हैं। इसे सुनते ही गजाधर बाबू बहु और बसन्ती को खाना बनाने को कहते है। इसे सुनते ही बसन्ती मुंह बनाते हुए कहती है कि बाबू जी पढ़ना भी है। इसे सुनने के बाद बहुत प्यार से गजाधर बाबू समझाते हैं कि ''तुम सुबह पढ़ लिया करो। तुम्हारी माँ बूढ़ी हुई, अब

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

वह शक्ति नही बची है। तुम हो, तुम्हारी भाभी है, दोनों को मिलकर काम में बाथ बटाना चाहिए।''3

घर छोटा होने के कारण गजाधर बाबू की चारपाई बैठक में ही डाल दी गयी।इस कारण से मेहमान का आना–जाना बहुत कम हो गया। बैठक पर चारपाई के अस्थायी प्रबंध को देखकर उनका मन बहुत दुखी होता है। इसका मार्मिक चित्रण उषा जी ने किया है। पत्नी का बहुत ही छोटा कमरा था, जिसमें डिब्बें, कपड़े पड़े हुए थे।

रात का खाना बसन्ती ने बनाया। खाना काफी फिका था। गजाधर बाबू ने चुपचाप खाया, परन्तु नरेन्द्र गुस्से से लाल–पिला हो गया, चिल्ला पड़ा, खाना किसने बसन्ती तुम्हे बनाने को कहा। वह बोली बाबू जी। माँ ने नरेन्द्र को प्यार से समझाया और अपने हाथों से खाना बनाकर खिलाया। हर शाम को सामने शीला के घर जाती। पिता जी इसे देखते ही बसन्ती को वहा जाने से रोकते और मना करते है। इसे सुनते ही बसन्ती मुंह उठाकर चली जाती है और पिता जी से बात नही करती। तीन–चार दिन के बाद गजाधर बाबू बसन्ती के बारे में पूछते है, तो पत्नी क्हती है कि मुंह उठाकर बैठी हुई है। आगे कहती है कि आप किसी भी मामले में हस्तक्षेप ना करें।

कुछ दिन पश्चात गजाधर बाबू चारपाई पर बैठे होते है, तब उनकी पत्नी पास में बैठी होती है। घर में पैसे की तंगी के बारे में बात उठाती है। वे अनुभव करते है कि दो वक्त का खाना परोसने से पत्नी का कर्तव्य पूर्ण हो गया है। वे केवल इस परिवार के सदस्यों के लिए कमाने का मात्र साधन है । उनके सुख–दुख का ख्याल किसी को भी नही।

गजाधर बाबू पत्नी से कहते है कि मुझे सेठ रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी मिल गई। खाली बैठे रहने से तो चार से घर में आये, वही अच्छा है। उन्होंने पत्नी से पूछा क्या तुम भी मेरे साथ चलोगी। इसे सुनते ही पत्नी ने सकपकाकर कहा ''मैं चलूँगी तो यहाँ का क्या होगा? इतनी बड़ी गृहस्थी, फिर सयानी लड़की.....।''4 गजाधर बाबू बहुत ही हताश स्वर में कहा ठीक है, तुम यही दायित्व सौंपा। नाशिकी के हिंदी प्रेमी रघुनाथ वैशंपायन क रहो। मैंने तो ऐसे ही कहा। गजाधर बाबू मन मे अनुभव करते है पहले भी अकेले थे और आगे जीवन भी अकेले ही काटना है।

नरेन्द्र बाबू जी का समान बांधता है और रिक्शा बुला लाता है। वे रिक्शा पर बैठते है। एक दृष्टि अपने परिवार वालों के तरफ देखते हैं, दूसरी तरफ देख कर आगे बढ़ते है। गजाधर बाबू के जाते ही बहु अमर से सिनेमा ले जाने को कहती है। बसन्ती भी उछलकर भैया मैं भी चलूँगी। गजाधर बाबू की पत्नी चौके के सारा काम खत्म कर, बाहर आकर कहने लगी, अरे नरेन्द्र, बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दें, उसमें चलने तक की जगह नही है। उषा जी बहुत ही मार्मिक ढंग से बताया है कि गजाधर बाबू के वापस जाने का दुख परिवार के किसी सदस्य को नहीं है।

स्पष्ट होता है कि गजाधर बाबू कई कल्पनाओं के साथ रिटायर होकर घर लौटते है। जीवन के अंतिम क्षण परिवार वालों के साथ सुख और चौन से गुजारेंगे। उन्हें मालूम हो जाता है कि उनका अपना आस्तित्व घर के माहौल में छोटा हो गया है। वह अपने ही घर में अजनबी बन जाते है और अंत में वह परिवार को छोड़कर चले जाते है। गजाधर बाबू अपने मन में महसूस करते है कि ''उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी, जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई ।''5

उषा जी ने अपनी कहानी में अकेलपन और अजनबीपन का सुन्दर चयन किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय।
2. मेरी प्रिय कहानियाँ – उषा प्रियम्वदा।
3. जिन्दगी और गुलाब के फूल – उषा प्रियम्वदा।
4. जिन्दगी और गुलाब के फूल – उषा प्रियम्वदा।
5. जिन्दगी ओर गुलाब के फूल – उषा प्रियम्वदा।

*****